□□□□ □□□□□□□□□□

जनसत्ता 4 सितंबर, 2014: अगर आपने हटिलर की आत्मकथा 'मीन कैम्फ' को प□ा हो तो यह समझने में शायद □कक्षण भी नहीं लगेगा कि सांप्रदायकि नफरत फैलाने के उद्देश्य से भारत में अभी 'लव जेहाद' के बहाने चला□ जा रहे अभयिान का मूल स्रोत क्या है□ हटिलर यहूदयिों के बारे में यही कहता था कि 'ये गंदे और कुटलि लोग मासूम ईसाई ल□कयिों को बहला-फुसला कर, उन्हें अपने प्रेम के जाल में फंसा कर उनका खून गंदा कयिा करते है□' हटिलर के शासन 'थर्ड राइख' के दुनयिा के सबसे प्रामाणकि इतहिासकार वलियिम □ल शरिर अपनी पुस्तक 'द राइज ऐंड फॉल ऑफ थर्ड राइख' के पहले अध्याय में लखिते है- 'हटिलर □कदनि वयिना शहर के भीतरी हस्सि में घूमने के अपने अनुभव को याद करते हु□ कहता है- 'अचानक मेरा सामना बगलबंद वाला काला चोगा पहने □कभूत से हो गया! मैंने सोचा, क्या यह यहूदी है? लत्सि शहर में तो ऐसे नहीं दखिाई देते! मैंने चुपके-चुपके उस आदमी को देखा□ उसके वदिेशी चेहरे, उसके नाक-नक्शो को जतिना ध्यान से देखता गया, मेरे अंदर पहले सवाल ने नया रूप ले लयिा□ क्या वह जर्मन है?' 'मीन कैम्फ' में यहूदयिों की ऐसी-तैसी करने के लि□ जघन्य संकेतों वाली बातें भरी हुई है कि यहूदी मासूम ईसाई ल□कयिों को फांसते है और इस प्रकार उनके खून को गंदा करते है□

इसी कताब में आगे दर्ज है- 'अपने बुरे अंत के समय तक वह □कअंधा उन्मादी बना रहा□ मौत के कुछ घंटे पहले लखिी गई अपनी अंतमि वसीयत में भी उसने युद्ध के लि□ यहूदयिों को जम्मिेदार ठहरायाा□ जबकि इस युद्ध को उसी ने शुरू कयिा था जो अब उसे और 'थर्ड राइख' को खत्म कर रहा था□ इस नफरत ने उस साम्राज्य के न जाने कतिने जर्मनों को ग्रस लयिा था□ आखरिकार वह इतने ब□े पैमाने के कत्लेआम का कारण बनी और उसने सभ्यता के शरीर पर ऐसा बदनुमा दाग छो□ दयिा जो तब तक कायम रहेगा जब तक इस धरती पर इंसान रहेगा□' यहां उल्लेखनीय है कि भारत में संघ परविारियों के बीच हटिलर की आत्मकथा 'मीन कैम्फ' □कलोकप्रयि कताब है□ जबकि इसे दुनयिा में बहुत ही ऊबाऊ और अपठनीय कताब माना जाता है□ लेकनि जर्मन इतहिासकार वर्नर मेसर के शब्दों में- 'लोगों ने हटिलर की उस अपठनीय पुस्तक को गंभीरता से नहीं प□ा□ अगर ऐसा कयिा गया होता तो दुनयिा अनेक बर्बादयिों से बच सकती थी□'

पूरी तरह से हटिलर के ही नक्शे-कदम पर चलते हु□ भारत में सांप्रदायकि नफरत के आधार पर □कफासस्टि और वस्तिारवादी शासन की स्थापना के उद्देश्य से आर□स□स का जन्म हुआ था□ इसके पहले सरसंघचालक गुरु गोलवलकर के शब्दों में- 'अपनी जाति और संस्कृति की शुद्धता बना□ रखने के लि□ जर्मनी ने देश से सामी जातियों- यहूदयिों का सफाया करके वशि्व को चौका दयिा है□ जाति पर गर्वबोध यहां अपने सर्वोच्च रूप में व्यक्त हुआ है□ जर्मनी ने यह भी बता दयिा है कि सारी सदचि्छाओं के बावजूद जनि जातियों और संस्कृतियों के बीच मूलगामी फर्क हो, उन्हें □करूप में कभी नहीं मलिाया जा सकता है□ हदिुस्तान में हम लोगों के लाभ के लि□ यह □कअच्छा सबक है□' (□म□स गोलवलकर, वी आर आवर नेशनहुड डफिइंड)□ कथति 'लव जेहाद' के मौजूदा प्रसंग से फरि यही पता चलता है कि संघ परविार के लोग आज भी कतिनी गंभीरता से हटिलर की दानवीय करतूतों से 'सबक' लेकर 'मूलगामी फर्क वाली जातियों और संस्कृतियों के सफा□' के घनिौने रास्ते पर चलना चाहते है□

फेसबुक पेज को लाइक करने के लि□ क्लकि करें- https://www.facebook.com/Jansatta

ट्वटिर पेज पर फॉलो करने केलि क्लकि करें- https://twitter.com/Jansatta